दैनिक भास्कर
रविवार, 22 अगस्त, 2021 नोएडा

आत्मीयता, स्नेह, प्यार और सौहार्द का प्रतीक

गीतांजलि सक्सेना

रिश्तों में ... रेशम के धागों से बंधे रहने के महत्व को हम समझते हैं। आज के परिप्रेक्ष्य में तो रक्षासूत्र को बांधने की अहमियत और इसलिए बढ़ जाती है, क्योंकि आधुनिक समाज में तेजी से दौड़ती जिन्दगी में परिवारों में मूल्यों में शीतलता को आंका जा सकता है। इसीलिए पर्वों को मनाना महज एक रीति-रिवाज या दस्तूर बनकर रह गया है। दरअसल, हमें भूलना नहीं चाहिए कि जीवन चक्र की नींव रिश्तों की मजबूती पर ही निर्भर रहती है और हर एक रिश्तों के बीच आपसी बंधन ही सामाजिकता का विकास करता है। इतना ही नहीं, रिश्तों में आत्मीय बंधन को मजबूती प्रदान करने के साथ स्नेह और सम्मान का प्रतीक रक्षा बंधन पर्व हर एक व्यक्ति को न केवल परिवार के, बल्कि समाज, देश और विश्व के प्रति अपने कर्तव्यों के प्रति जागरूकता का संकल्प जगाता है। रिश्तों में यह 'धागा' भावनाओं से भरा है, जिसके पहुंच की सीमाओं को रेखांकित करना असंभव है। यह श्रद्धा और विश्वास का वह धागा है, जो हर रिश्ते में दूसरों के प्रति उनको अपने दायित्वों को याद कराता है।

रिश्ता कोई भी हो 'धागों के बंधन' में खूबसूरती से बंधे हुए होते हैं, जो सिर्फ भाई बहन की भावनाओं को और उनके अपनत्व व स्नेह को ही दर्शाता है, बल्कि यह पर्व सामाजिक और पारिवारिक निकटता में आई कमी में भी सुधार लाता है। हमें इस ओर ध्यान दिलाया जाता है कि ईश्वर का बनाया हर एक रिश्ता अनमोल होता है, जिसे निभाने, उसे बरकरार रखने और सींचने की जिम्मेवारी परिवार के हर सदस्य पर रहती है। सच तो यह है कि वे बड़े सौभाग्यशाली परिवार होते हैं, जो रिश्तों से भरपूर सदस्यों की छत्रछाया में रहते हैं।

यह श्रद्धा और विश्वास का वह धागा है, जो हर रिश्ते में दूसरों के प्रति उनको अपने दायित्वों को याद कराता है।

परिवारों के साथ अच्छे संबंधों का महत्व, जो भोगते हैं, वही जानते हैं। एक स्नेही और निष्ठावान परिवार का हिस्सा होना अपने आप में बहुत सुरक्षित और सुखमय अहसास है। हर एक रिश्ता का अपना स्वरूप होता है और उसकी एक गरिमा होती है। उसे संतुलित और स्वस्थ बनाए रखने के लिए प्रकृति के नियमों के तहत हर प्रयास को प्राथमिकता देना हमारे हाथों में रहता है। सभी जानते हैं कि एकजुटता, समान विश्वास एक दूसरे का सम्मान और मूल्यों को साझा करने वाले परिवार ही एक अहम एवं महान बंधन को विकसित करने में सक्षम होते हैं, क्योंकि अंतरंगता और अपनेपन की भावना ही सुरक्षा और निकटता का वातावरण उत्पन्न करती है। इससे दुख और कठिनाइयों के समय एक दूसरे पर अटूट विश्वास होने से उन्हें शक्ति मिलती है। स्वस्थ पारिवारिक सम्बन्धों के प्रभाव को हम सामाजिक रूढ़िवादी विचारधारा के बदलाव की ओर ले जाने वाला एक सफल कदम के रूप में भी देखा जा सकता है।

रक्षा बंधन (रक्षा सूत्र)

हर त्योहार के मनाने और उनकी गतिविधियों के पीछे भी अनेक पारिवारिक और सामाजिक मूल्य छिपे रहते हैं, जो देश की संस्कृति का एक हिस्सा है। त्यौहार के अवसरों पर बस उन सब परम्पराओं को याद दिलाकर निभाने का प्रयास करना ही संकल्प है, अन्यथा युवा पीढ़ी परिवार के मूल्यों और देश की सांस्कृतिक धरोहर को कैसे समेट पाएंगे। इसलिए यह जरूरी हो जाता है कि अवसर या मौका छोटा हो या बड़ा, हर लम्हे को दिल से स्वीकार कर के स्वागत करें और रिश्तों की रक्षा के प्रति किए अपने संकल्पों को पुनः याद करें।

रक्षा बंधन शब्द का सही अर्थ तभी सार्थक हो पाएगा, जब नारी की प्रतिरक्षा की भावना को अधिक प्रबल कर सकें। यदि हम इस त्यौहार की सही परम्परा और उद्देश्य को समझेंगे, तो हम रक्षासूत्र के सभी प्रसंगों के महत्व के मूल को प्राप्त कर सकेंगे। सदियों से चली आ रही रक्षा बंधन मनाने की परम्परा हमारे देश के इतिहास के ऐतिहासिक पन्नों में भी दर्ज है। एक दूसरे के प्रति प्रेम, स्नेह और भाई अपने कर्तव्य के तहत बहनों की रक्षा का दायित्व लेते हैं। अनेकों प्रसंगों में राखी के महत्व को वर्णित किया गया है।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में जनजागरण के लिए इस पर्व का सहारा लिया गया था। इस दिन देशवासियों के साथ एकता और सामंजस्य को बढ़ावा देने के लिए इस्तेमाल किया गया था। कई तथ्य उल्लिखित हैं कि रबीन्द्रनाथ ठाकुर ने अपनी प्रसिद्ध कविता मातृभूमि में बंग-भंग का विरोध करते समय रक्षाबंधन को बंगाल में हिन्दू मुस्लिम को करीब लाने के लिए एकता के प्रतीक के रूप में प्रेषित किया। ऐतिहासिक महत्व लिये प्रसंग यह भी है कि राजपूत जब लड़ाई पर जाते हैं, तब-उनके माथे पर तिलक लगाने के साथ रेशमी धागा रानियां इस विश्वास के साथ बांधती हैं कि यह उन्हें विजयश्री के साथ वापस लाएगा। इस तरफ रक्षाबंधन त्योहार सिर्फ भाई-बहनों के स्नेहमय बंधन तक सीमित नहीं रह जाता है। सिखों के इतिहास में दिलचस्प प्रसंग है कि 18वीं शताब्दी के दौरान आर्मी ने राखी की प्रथा का चलन किया, जिसके अन्तर्गत किसान अपनी उपज का छोटा सा हिस्सा मुस्लिम आर्मी को देकर,जिसकी एवज में वे आक्रमण नहीं करते थे। यह दर्शाता है कि रक्षा सूत्र रिश्तों में सांप्रदायिकता और वर्ग जाति के बीच की दूरी को कम करने में कितना व्यापक स्तर पर महत्वपूर्ण है।

भारत वर्ष में हर त्यौहारों से जुड़ी अनेकों आध्यात्मिक पौराणिक कथाएं हैं, जो प्राचीनकाल से प्रचलित हैं। सभी प्रसंग हमारी संस्कृति उनसे जुड़ी परम्पराओं एवं संस्कारों के अद्भुत मिश्रण को दर्शाती हैं। जिन्हें हमने अपने जीवन में ढाला हुआ है और सामाजिक सुरक्षा के लिए साझा भी करते रहते हैं। महाभारत में विभिन्न प्रसंगों में भगवान कृष्ण ने युद्ध के समय पाण्डवों की रक्षा के लिए रक्षासूत्र की शक्ति के बारे में युधिष्ठिर से कहा था। शिशुपाल के वध करते वक्त कृष्ण को उंगली में चोट लगने पर द्रौपदी ने साड़ी फाड़ कर चोट पर बांधा था। यह भी श्रावण मास की पूर्णिमा थी। यही नहीं, युद्ध के दौरान द्रौपदी ने कृष्ण की रक्षा के लिए और कुन्ती ने अपने पौत्र अभिमन्यु को राखी बांधी थी। विष्णु पुराण में उल्लेख है कि इंद्र की पत्नी इंद्राणी ने उनकी सुरक्षा के लिए और युद्ध में सफलता हासिल करने के लिए राखी बांधी थी। राखी पर्व के अनेकों प्रसंग हैं, सभी का जिक्र करना संभव नहीं है। दरअसल, ये सभी प्रसंग ये ही दर्शाते हैं कि रक्षासूत्र का मूल मंत्र सिर्फ आपसी स्नेह, कर्तव्यपरायणता और समाज के हर पहलू की रक्षा करने के दृढ़ संकल्प को याद दिलाता है। रिश्तों को मजबूत करने का पर्व रक्षाबंधन ही है।

देश के हर राज्य में राखी का त्यौहार अलग-अलग मान्यता के अनुसार मनाते हैं। उत्तरांचल में इसे श्रावणी कहते हैं और यजुर्वेदी दिग्गजों का उपक्रम होता है। ब्राह्मणों का इस दिन का विशेष महत्व है। अमरनाथ धार्मिक यात्रा गुरु पूर्णिमा से प्रारम्भ होकर रक्षा बंधन पर सम्पूर्ण होती है और इसी दिन भगवान शिव का शिवलिंग भी पूर्ण आकार प्राप्त करता है।

महाराष्ट्र में इस दिन नदी या समुद्र के तट पर जाकर जनेऊ बदलने की परंपरा है। राजस्थान में रामराखी और चूड़ाराखी या लूंबा बांधने का रिवाज है, जिसे केवल भगवान को बांधने की परम्परा है। दक्षिण में रक्षा बंधन का दिन ब्राह्मणों को भोजन खिलाना एवं दान आदि के लिए महत्वपूर्ण माना जाता है। नेपाल और जैन परंपरा में भी रक्षा बंधन के दिन धर्मगुरु धर्म और संस्कृति की रक्षा के संकल्प के साथ रक्षासूत्र में बंधने और उसके महत्व के उल्लेख मिलते हैं। रक्षा बंधन पर्व को हम आज के संदर्भ में भी समझें तो यह सामाजिक और पारिवारिक एकजुटता, रिश्तों में सकारात्मक प्रभाव में इजाफा कर सकने की क्षमता रखता है। बस जरूरत है सूक्ष्म, स्नेही संकेत या भावपूर्ण शब्दों को अपनी जीवनशैली में अपनाये गये विश्वास में ढालने की। यह अचूक नुस्खा और रामबाण उपचार है। आशा, स्नेह, प्यार और उमंग बेजान रिश्तों में ही नहीं, देश और समाज की रक्षा के संकल्पों में भी जान डाल सकता है।